



## What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe.

It propagates the universal doctrines of humanity.

It is neither a religion nor a sect.

# ARYAN VOICE

YEAR 39

11/2017-18

MONTHLY

November 2017

Please join us.....

## Havan

**Sunday 5<sup>th</sup> November 2017 - 11am – 1pm**

**At**

**321, Rookery Road, Handsworth**

(We will do Havan at our new home before refurbishment work starts)

(From 12<sup>th</sup> November 2017 Sunday congregation and Havan will continue at 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham until further notice.)

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS

(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,  
BIRMINGHAM, B7 4SA - Tel: 0121 359 7727

E-mail– [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)

Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

## CONTENTS

<b>10 Principles of Arya Samaj</b>		<b>3</b>
<b>Give us with both hands</b>	<b>By Mr Krishan Chopra</b>	<b>4</b>
<b>मृत्युञ्जय मंत्र - व्याख्या-</b>	<b>आचार्य डॉ. उमेश यादव</b>	<b>6</b>
<b>13th Sanskar – Marriage Ceremony Sacrament</b>		<b>9</b>
<b>भातृप्रेम में मन की व्यथा</b>	<b>सत्य प्रकाश गुप्ता</b>	<b>13</b>
<b>Gayatri Maha Yajna 2017</b>	<b>By Mrs Brij Bala Duggal</b>	<b>17</b>
<b>Gayatri Mantra</b>		<b>19</b>
<b>Matrimonial Service</b>		<b>20</b>
<b>News (पारिवारिक समाचार)</b>		<b>21</b>
<b>ORDINARY Members &amp; Aryan Voice</b>		<b>24</b>
<b>Arya Samaj West Midlands New Home</b>		<b>25</b>

**For General and Matrimonial Enquiries**

**Please Ring**

**Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)**

**Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,**

**Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.**

**Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727**

**E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

## **10 Principles of Arya Samaj**

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

## Give us with both hands

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्यामहो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् । हस्तौ पृणस्व  
बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् ॥ अथर्ववेद ७.२६.८

Divo visna uta va prthivya maho visna urorantariksats I hastou  
prnasva bahubhirvasairavyairaprayaccha daksinadota sakhyat  
II

Atharva Veda 7.26.8

### Meaning in Text Order

Divah = from planetary region

Visno = Omnipresent Lord

Uta va = and

Pathvyah = from earth

Mahah = eminent

Visna = omnipresent

Uroh = widely spread

Antariksats = from mid space

Hastou = both hands

Prnasva = fill

Bahubhih = with plentiful

Vasavyaih = treasurer

Aprayacch = grant

Daksinats = with right hand

Uta = and

Savyat = left hand

### Meaning

O Omnipresent Lord! You are the unimaginable holder of treasure in the planetary region, midspace and earth. Gant us wealth with both hands from your vast riches.

## **Contemplation**

It is the prayer of a devotee to God where the devotee says your wealth is spread out in all the regions of the universe. In the planetary region, you have the Sun and the Moon, which give us light and heat so we can see and feel warmth when it is cold. The rays of the moon bring sweetness to our plantations. In the midspace there is plenty of air and clouds which are useful to us. Air is vital for breathing. Without this our survival will be impossible. The clouds shower us with rainwater, the pure water which is a great necessity for our life and crops.

The planet Earth, is a wonder of your creation, it contains precious metals such as gold, silver, copper, iron, diamonds and pearls in abundance from the sea. Grant these luxuries to us, not in a small quantity but a great amount.. With this we hope to lead a luxurious life.

O Lord! We are not content with material wealth. We are keen to receive the spiritual riches of the planetary region, mid space and earth. Our food sheath (annamaya kosha) is the earth which includes the whole body. The luxury of the food sheath is physical health and physical strength without which the life of a person is very difficult. Vital breath sheath, mind sheath and vigyan maya sheath is midspace. The mind and senses make manomaya sheath. By which the knowledge of the senses and resolution of the mind gives a truthful resolution,. The intellect with senses is called vijnayaanmaya sheath. Its main task is to consider and think over the knowledge and reach to a precise conclusion.

The anand maya sheath is the planetary region wherein the soul and God resides. Its luxury is the attainment of God. O Lord! May you fulfil all our requests. We pray to Thee Lord! Oblige us with all luxuries.

**By Mr Krishan Chopra**

## मृत्युञ्जय मंत्र

व्याख्या- द्वारा आचार्य डॉ. उमेश यादव

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

यजुर्वेद ३.६०/ऋग्वेद ७.५९.१२

यह मंत्र ईश्वरीय स्तुति व प्रार्थना परक है । इस मंत्र का देवता अर्थात् विषय "रुद्र" है । यजुर्वेद में तो यह मंत्र एक पूरे मंत्र का आधा हिस्सा है पर ऋग्वेद में इतना ही एक पूरा मंत्र पढ़ा गया है । रुद्र परमात्मा का एक नाम है । जो अपने न्यायपूर्वक दुष्टों को दण्ड देकर रुलाता है; इसलिये वह रुद्र कहलाता है । इस प्रकरण में रुद्र नामक ईश्वर के अनेक नाम और भी वर्णित हैं-जैसे त्र्यम्बक, शिव, शंकर, महादेव आदि । इन सारे नामों का अर्थ परमात्मा ही है । तीनों लोकों में एक रस रहते हुये अपने अनन्त ज्ञान से जो सबका नियन्त्रण करता है, वह त्र्यम्बक/रुद्र/ ईश्वर/परमेश्वर/परमात्मा है । देखें- यजुर्वेद भाष्य ३.५८/६० महर्षि दयानन्द । शिव- जो संसार का अपने अनन्त ज्ञान से कल्याण करता है, वह शिव है । ऐसे ही सबका कल्याण करने वाला शंकर नाम से परमात्मा जाना जाता है । महान् देव इति महादेव- यह भी ईश्वरवाची ही है क्योंकि ईश्वर से महान् कोई अन्य नहीं है । न ही कोई ईश्वर के बराबर है । ये नाम मनुष्य के हो सकते हैं । माता-पिता अपने बच्चों के नाम ऐसे परमात्मावाची शब्दों से रखते हैं यह सोचकर कि उनके बच्चों में यथासम्भव उत्तम गुण-कर्म-स्वाभाव का विकास होगा । ये बच्चे अच्छा व महान् बने । माता-पिता की ऐसी भावना अच्छी है । पर इन नाम वाले मनुष्य परमात्मा नहीं बन सकते, मनुष्य की सीमा में ही महान् बन सकते हैं ।

पौराणिक जगत् में मंत्र को "मृत्युञ्जय मंत्र" कहा जाता है । इस मंत्र के अंतिम

चरण में जीवात्मा / मनुष्य प्रार्थना करता है कि वह मृत्युरुपी वन्धन से छूटकर अमृत= ब्रह्म/ईश्वर/परमेश्वर/परमात्मा से जुड़े। “बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्” पदों से यही भाव निकलता है। सम्भवतः इसी कारण इसे मृत्युञ्जय कहा गया अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करना या करने में सहायक जो है वही मृत्युञ्जय हुआ। मंत्रगत भावों के अनुसार मनुष्य अपना जीवन चलाये तो मनुष्य-आत्मा इस मृतरूप शरीर में रहकर भी अपने उत्तम वेदरूप सद् ज्ञानपूर्वक कर्म करता हुआ जन्म-जन्मान्तर के भोगों को प्राप्त कर अमृत ब्रह्म/नित्यानन्दस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त कर अपनी अमरता सिद्ध कर सकता है। अज्ञानतावश मंत्र गत् “त्र्यम्बक” शब्द का अर्थ कहीं-कहीं “तीन आँखों वाला शंकर” इति समझा जाता है पर ऐसा नहीं है। शंकर नाम वोधित ईश्वर की तीन आँख नहीं है अपितु वह परमात्मा अपने अनन्त ज्ञान से मनुष्यों को ज्ञान-कर्म-उपासना त्रि-विधा का उपदेष्टा है। वह ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना त्रि-विध द्वारा जानने व प्राप्त करने योग्य है। पृथिवि, अन्तरिक्ष व द्यौं तीन लोकों को वह जानने वाला है। ऋग्वेद, यजुर्वेद व सामवेद के अमृत ज्ञान से सबको सत्पथ पर चलाने वाला है। अतः शंकर परमात्मा की तीन आँख बताना/कहना अनुचित है। परमात्मा की केवल एक ही अनन्त ज्ञान चक्षु मान्य है। “सत्यमनन्तं ज्ञानं ब्रह्म”- ऐतरीय उपनिषद् अर्थात् ब्रह्म कहो, परमात्मा कहो, रुद्र कहो या शंकर कहो- वह सत्य है, एक है; अनन्त ज्ञानवाला है। तो आर्ये हम इस मंत्र का अक्षरशः सामान्य अर्थ समझते हैं।

ओ३म्- परमात्मा का निज सर्वश्रेष्ठ नाम है जो परम्परा से ईश्वरीय ज्ञान वेद मंत्र पढ़ने व लिखने से पूर्व प्रयोग में आता है।

त्र्यम्बकम्= तीनों लोकों में अपने गुण-कर्म-स्वभाव से एक रस रहने वाला अथवा अपने अनन्त ज्ञान से तीनों लोकों का नियन्त्रण करने वाले ईश्वर को।

यजामहे= हम यजते हैं अर्थात् उसकी स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हैं।

सुगन्धिम्- सुगन्धि अर्थात् सत्कर्म में प्रेरणा देकर यशरूप जीवन को बढ़ाने वाले ईश्वर को अथवा उत्तम गन्धों से युक्त पदार्थों के सेवन से यशमय जीवन बनाने

की प्रेरणा देने वाले ईश्वर को ।

पुष्टिवर्धनम्- सृष्टि-उत्पत्ति द्वारा आवश्यक भोग-पदार्थों को दे उनसे जीवन शक्ति प्राप्त कराने वाले ईश्वर को अथवा आत्मा, समाज व राष्ट्र में सबको उत्तम बल प्रदान कर उद्देश्यपूर्ति में सबको लगानेवाले ईश्वर को ।

ऊर्वारुकम्+इव= पके हुये खरबूजा फल की तरह ।

बन्धनान्= बन्धनात्= बन्धन से ।

मृत्योर्= मृत्योः= मृत्यु से ( मृत्युरूपी बन्धन से/ मर्त्यलोकी शरीर बन्धन से ) ।

मुक्षीय = छूट जाऊँ अथवा छुड़ा कर ।

माऽमृतात्= मा+अमृतात्= मा- नहीं, अमृतात्- अमृत से अर्थात् अमृत ( ब्रह्म/ईश्वर ) से मत छुड़ा अर्थात् अमृत/ ईश्वर से जोड़ ।

भावार्थ- हे तीनों लोकों के स्वामी परमेश्वर ! हम मनुष्य अपने जीवन में सत्कर्म करने हेतु सद् ज्ञान पाकर आपकी प्रेरणा से पुरुषार्थ करते हैं और जीवन की सुगन्धि=यश व पुष्टि=बल पाते हैं । इस कारण हम सब आपका यजन करते हैं अर्थात् आपकी स्तुति-प्रार्थना व उपासना करते हैं । प्रार्थना है कि जैसे पका हुआ खरबूजा का फल टहनी से स्वतः टूट जाता है वैसे ही हम भी इस मृत्युरूपी बन्धन से छूट जायें पर अमृत से कभी भी अलग न होवें ।

व्यवहार में देखा जाता है कि कच्चा खरबूजा टहनी से स्वतः नहीं टूटता अपितु किसी के तोड़ने से टूटता है; वह भी फट जाता है, सीधा नहीं टूट पाता । इसी प्रकार मनुष्य जीवन भी अपरिपक्व अवस्था में शरीर छोड़ने पर अमृत को प्राप्त नहीं कर पाता अपितु अमृत ब्रह्म की व्यवस्था से बार-बार जन्म-मृत्यु के बन्धन में पड़ता रहता है । जीवन की अपरिपक्वता अज्ञानता, कुकर्म, अन्याययुक्त व्यवहार आदि से मानी जाती है । खरबूजा-फल पूर्ण पककर पूर्णतया सुगन्धि व मिठास से युक्त हो कर संसार के मनुष्यों के लिये आनन्ददायक बन जाता है मानो उसकी यात्रा पूर्ण हो जाती है वैसे ही युक्तात्मा ज्ञानपूर्वक सत्कर्म से दीर्घ कालीन मुक्ति/मोक्ष पाता है । अस्त्वोमिति ।



## MARRIAGE CEREMONY SACRAMENT

### (13<sup>th</sup> SANSKAR)

Marriage Sacrament is the most popular Sacrament because this Sacrament, in one way or other, is performed for every person who wants to live in a household set up (Grihastha Ashram).

This is the second of the four phases of life i.e. Brahamcharya (Celibacy hermitage), Grihastha (Household hermitage), Vanprastha (Abandonment of worldly things) and Sanyas (Recluse).

This Sacrament is performed with lot of pomp and show by all the families according to their social and financial status in a society.

**VI-VAAH = VI - means speciality and VAAH means conveying or carrying. So Vivah means to fulfil the responsibility of a married life in a special and dignified way.**

To fulfil the responsibility of a married life in a very responsible and dignified way is the true meaning of a Marriage Sacrament. During the Marriage Sacrament the would be husband and wife take various vows to fulfil their duties and take care of responsibilities of their household life to the best of their abilities.

Maharishi Dayanand Saraswati has written that a man and a woman willing to marry each other should have matching attributes, deeds and nature in order to live a successful married life in future. When a compatible man and a woman come together to Marriage Sacrament in order to live a proper and married life with the main aim of producing top quality children then this event is called Vivah.

**Consideration of Age for Marriage** - It is wrong to marry in the same lineage (Sagotra) i.e. descent from an ancestor and in near relations. It is wrong to marry among your cousins, nephew, a

marriage between children of brothers, sisters and near relatives due to following reasons.

1. The boy and girl know the good and bad things about them and so do not respect the values of a husband and wife when married. This results in regular quarrels between them. It is a well know saying that a far away thing is always more attractive than a near one.
2. The genetic defects in Chromosomes of near relatives get magnified by their marriage. So children born to such parents are highly likely to be born with various congenital defects.

One should always try to marry in a far away family. When married children live far away then their parents will not be able to interfere in their married life. On quite a few occasions unnecessary involvement of parents breaks the married life of their children. Married young couple are quite capable to sort out their differences in their marriage among themselves. Thus they continue to live a happy, healthy and prosperous life to gather.

There is an example written in Nirukta –

**“Duhita Durhita Dure Hitaa Bhavteeti Vaa “. It is better to marry a daughter as far away from parents house as possible because it is good for their daughter.**

It is also important for a man and a woman to know the attributes, deeds and nature of each other before deciding to marry. They must decide about marriage themselves without any pressure from their parents. One must remember that a man born in a higher caste like Brahman can become a lower caste Shudra by his attributes, deeds and nature while its opposite can also happen. A man born in a lower caste like Shudra can become a higher caste Brahman by his

attributes, deeds and nature.

**An example from Manusmriti tells us about this fact.**

**“Shudro Braahmartaameti Braahmarshcheeti Shudrataam.  
Kshatriyaajaatamevantu Vidyaadveshyaattatheva cha.”**

**Maharishi Dayanand Saraswati has written very clearly that “ if a human being has attributes, deeds and nature of a Brahman then that person should get the status of a Brahman in a society even though he/she is born in a Shudra family. Similarly a human being born in a Brahman family but has attributes, deeds and nature of a Shudra should get the status of Shudra in a society.”**

**Recognition of a Brahman -**

Kindly read these Shlok from Mahabharat.

- 1. Satyam Daanmathadroha AanrimShasyam Trpaa Ghrinaa.  
Tapashacha drishyate Yatra Sa Brahman Iti Smritah.**
- 2. Shudre Chaetada Bhavellachyam Dvije Tachcha Vidayate.  
Na Vai Shudro Bhavechchudro Brahmno Na Cha  
Brahmanah. Mahabharat- Shaa. 188.4.8**

**Meaning - A person with attributes of truthfulness, generous donations for good causes, free of jealousy, politeness and mental temperament to deal with any situation in life with a stable and calm mind should be called Brahman. If these qualities are seen in a person born in a Shudra family he/she should be treated as a Brahman and vice versa.**

**Maharishi Dayanand Saraswati always supported the caste**

**system which was based on attributes, deeds and nature of a person instead of birth of a child in a particular caste. So it is important that a person with attributes, deed and nature of a Brahman should marry a person with similar qualities, a Khatriya a Vaishya and a Sudra should do the same and marry a person with similar qualities. They should not marry on the basis of birth in a particular caste system.**

**Consideration for a date of Marriage-** A man and a woman should marry on a day when both feel very happy and have a strong desire to marry each other.

A woman is ready to get married after three nights of her menstrual cycle. This is a most favourable period for a wife to get pregnant. This is why it is recommended that after marriage a couple should observe celibacy for three nights. Then they should follow the procedure of Impregnation Sacrament. In common lay person language people call it Chauthari (fourth Day after marriage). People do Yajna/Havan, worship of God etc in their homes on this day. This is actually performance of Impregnation Sacrament in a modified way. But we should do a Impregnation Sacrament in a proper way as described earlier in this book.

In next chapter we will discuss the practical aspects of conducting a Marriage Sacrament.

**Written by**  
**Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi**  
**And**  
**Translated by**  
**Dr Narendra Kumar in English**

## भातुप्रेम में मन की व्यथा

लगभग अंतिम अवस्था में जब मान्य श्री गुप्ता जी ने अपने बड़े भाई श्री वेद प्रकाश गुप्ता जी को देखा तो उनका मन और ही व्यथित हो उठा । उनका कवि-हृदय कुछ विह्वल भावों से भरने लगा जिन्हें आप स्वयं उनकी लिखी इन पंक्तियों से समझें । मैं समझ सकता हूँ कि अपने आदरणीय पितृतुल्य प्रतिष्ठित भाई की इस अवस्था पर उनके अन्दर ऐसी व्याकुलता का होना स्वाभाविक है । कहावत है कि हथौड़ा जिसके सिर पर पड़ता है , चोट उसे ही महसूस होता है । अधिक न कहता हुआ मैं आदरणीय श्री सत्य प्रकाश जी गुप्ता की इन पंक्तियों को सीधा प्रस्तुत कर देता हूँ । आशा है आप भी इन्हें पढ़कर निश्चित ही द्रवित हो जायेंगे ।

- आचार्य डॉ. उमेश यादव

### भाई की अंतिम दशा देख- सत्य प्रकाश गुप्ता के मन-भाव

नेत्र खुले हुये, मुँह खुला हुआ,  
हाथ जुड़े हुये, अथवा पाँव भी मुड़े हुये,  
कुछ देख न पाये खुली हुयी उन अँखियन से,  
कुछ बोल न पाये, खुले हुये अपने मुँह से ।

न हाथ हिले न पाँव हिले,  
बस नैन से नैन किये जाये,  
उन नैनन की उन नैनन से,  
मैं जा पहुँचा उन नैनन में ।

जहाँ अन्धियारा ही अन्धियारा था,  
कुछ समझ न पाया नैनन से,

बाहर झाकूँ, कभी अन्दर झाकूँ,  
कुछ टटोल रहा था, अन्दर-बाहर  
अन्दर-बाहर के कुछ उधेड़बुन में,  
कुछ खो गया था अन्दर-बाहर ।

अन्दाजा क्या मैं लगा सकता था,  
ठीक भी हैं या वे ठीक नहीं,  
कुछ आवाजें आर्यीं, कुछ चली गयीं,  
खयाल आया कि वे ठीक नहीं ।

जब कुछ न खायें, कुछ भी न पियें,  
कुछ बात-चीत भी न कर पायें,  
सच पूछो तो मन तो मन ही है,  
कभी चुप होता, कभी रोता है,  
सब कुछ यह देख विस्तर पर,  
कभी मन रोता है और रोता ही रहता है ।

मेरे अपने ही विचार में- कवि-भाव सत्य प्रकाश गुप्ता

क्या कहूँ, किससे कहूँ, अपने दिल की दास्तां,  
सिवाय इस कागज व कलम के, जब रहा न कोई पास,  
कुछ तुम ही कहो मेरे भगवन्, मैं क्या कुछ कहना चाहता हूँ,  
मन दुःखी है मेरा इतना प्रभो, कुछ भी तो नहीं कह पाता हूँ ।

चन्द क्षण हैं सांसे मेरी, मैं जो भाई को देना चाहूँ,  
कुछ आप ही कहो प्रभु मेरे, मैं कैसे यह सब कुछ कर पाऊँ ।

## मन की विह्वलता की पराकाष्ठा

अबके विछुड़े हुये दोनों, कब कहाँ मिलते हैं,  
जाने किस मोड़ पर, कब हम दोनों मिलते हैं,  
रोशनी आँख की जब कहीं खो जाये,  
टुकड़े-टुकड़े होकर कहीं विखर जाये,  
जाने ये विखरे हुये टुकड़े कब कहाँ मिलते हैं ,  
अब के विछुड़े हुये दोनों कब कहाँ मिलते हैं ।

जिसे ढूँढे ये नजर, और वह न मिले,  
बहुत से ऐसे हैं फूल, रहते हैं जो विन खिले,  
जाने किस डाल पे यह फूल आन मिलें,  
अबके विछुड़े हुये दोनों कब कहाँ आन मिलें ।

समय बिताया जो उन्हीं के संग-संग में,  
बैठे हुये, सोते हुये, रोते हुये और हंसते हुये,  
जाने वे लौट के दिन फिर कहाँ कब मिलते हैं,  
जाने किस मोड़ पर, हम दोनों कब कहाँ मिलते हैं । अबके विछुड़े....

उनकी आँखों में अंधेरा था जो आया हुआ,  
समय वीते या न भी वीते, फिर भी वह समय विताया हुआ,  
दास्तां दोनों दिलों की यही है, कोई याद करे या न करे,  
समय वीता जो वेखबर, कब कहाँ आन मिले,  
अबके विछुड़े...

दिन का उजाला हो या हो रात का अन्धेरा,  
पद चाप भाई के पाँव की, मेरे जहन में रहती है हर पल,

और वे पथराई हुई आखें, और नीर भरे नयन,  
क्या कभी भूल पायेंगे..... कभी नहीं,  
वे वेवस इशारें और केवल वेवस और मजबूर निगाहें  
बस..... कहाँ कभी भूल पायेंगे..... कभी नहीं ।

उठना चाहें, उठ न सकें,  
खाना चाहें, खा न सकें, आह बस....

जिस्म की थकावट और जिस्म की वेवसी,  
कुछ न कहते हुये भी कह जाती है,  
अलविदा सबको वह बैठे ही बैठे कह जाती है ।

आज नहीं कल और कल नहीं परसो,  
शायद कभी आन मिले अबके विछुड़े.....।

-सत्य प्रकाश गुप्ता

प्रिय पाठक गण ! कविता के अन्दर भाव भरे हुये हैं । कहीं-कहीं हृदय की व्याकुलता पाराकाष्ठा को छू गयी हैं । यत्र-तत्र रिक्त स्थानों को देख इस व्याकुलता की गहराई को आप स्वयं समझ सकते हैं । भातृ-प्रेम के सन्दर्भ में इन प्रस्तुत पंक्तियों में भरे भाव अत्यन्त मर्मस्पर्शी, स्वाभाविक और सराहणीय हैं । हम वैदिक धर्मी पुनर्जन्म/मिलन में विश्वास करते हैं । यह वैदिक सिद्धान्त भी है कि दिवंगत आत्मा पुनः-पुनः शरीर धारण करती है । क्या पता परमात्मा इन्हें कहीं मिला ही दे । आत्मा किसी भी भावी सम्बन्ध में मिल सकती है । हमें नहीं पता है पर परमात्मा को तो पता ही है । अतः परमेश्वर से प्रार्थना करना भी समुचित ही है । इन पंक्तियों में कवि का यह भाव भी प्रलक्षित हो आया है ।

---आचार्य उमेश



## **Gayatri Maha Yajna** **2017**

This year we celebrated Gayatri Maha Yajna on 10<sup>th</sup> September 2017 at our Arya Bhavan in Nechells, Birmingham with about 120 people of all ages participating with great devotion.

Any such event takes a lot of planning and preparing behind the scenes as well as good teamwork on the actual day. We are fortunate to have members and volunteers who are always willing to help and show their commitment to Arya Samaj's work for the community.

Four Havan Kunds were set up and there were three sittings enabling 48 families to perform havans. Almost everyone present had the opportunity to participate in this event.

Acharya Umesh Yadav Ji asked Dr. P.D. Gupta, Mrs. Rekha Gupta, Dr. Narendra Kumar and Shama Ji to be the main Yajmans and asked them to welcome all others to perform Havan.

Acharya Ji explained the meanings of the Ved Mantras both in English and Hindi Language.

At the end of each sitting, the participants were offered Halwa Parsad prepared by Mrs. Shama Kumar, Mrs. Gagan Molhotra, Mrs. Rekha Gupta and Mrs. Vimla Dodd.

Fruit for today's celebration was provided by Mr. And Mrs. J.P. Sethi.

Rishi Langar was provided by Dr. P.D. Gupta and Rekha Gupta from Shankar Sweet Centre.

All the Samaghri and Ghee was provided by Mrs. Saroj Adhlakha.

After the third sitting, Acharya Ji blessed everyone and prayed for their happiness and well being. The feeling of being blessed at such an important occasion cannot be described in words; it has to be felt personally by each individual.

Donations received on the day, including payment for Rishi Langar, amounted to approximately £1600. All contributions whether in form of money or in terms of services are much appreciated.

Following the completion of Havan by Yajmans, all members of the Board of Trustees /ASWM with some other members hoisted the “Vedic Om Flag”. The Arya Samaj “Dhwaja Geet” was recited by everyone present.

Dr. Kumar informed everyone of the progress with regard to having completed the purchase of 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham – our new location.

Dr. Kumar’s Nephew Mr. Amitabh Arya from India also attended today’s event. Everyone was thanked for participating and helping today and Dr. Kumar mentioned names of members who helped with the preparations to make this a successful day.

Mr. Harish Malhotra, Mr. Ravinder Renukunta, Dr. Umesh Kathuria, Mrs. B.B. Duggal, Mrs. Vimla Dodd, Acharya Yadav Ji and Mrs. Shanti Yadav, Mr. D. S. Rana.

The event was concluded with the Shanti Path.

**Written by Mrs. B.B. Duggal**  
**(General Secretary - Board of Trustees**  
**Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**

## **GAYATRI MANTRA**

**OM BHURBHUVAH SVAH  
TATSAVITURVARENYAM  
BHARGO DEVASYA DHEEMAHI  
DHIYO YO NAH PRACHODAYAAT.**

### **Meaning of Gayatri Mantra:-**

- **(OM)** IS THE MAIN NAME OF ALMIGHTY GOD WHICH INCLUDES ALL OTHER NAMES OF GOD.
- **(BHUH)** HE IS LIFE OF LIFE.
- **(BHUVAH)** HE IS THE PROTECTOR FROM ALL THE PAINS.
- **(SWAH)** HE IS ALL BLISS AND GIVER OF ALL BLISS TO HIS DEVOTEES
- **(SAVITUH)** HE IS CREATOR OF ALL UNIVERSE, THE ILLUMINATOR OF ALL THE LUMINOUS BODIES LIKE SUN ETC. THE GIVER OF ALL WISDOM AND WEALTH
- **(DEVASYA)** WE ESTABLISH HIM IN OUR HEART AS MOST DESIRABLE AND VICTORIOUS
- **(VARENYAM)** MOST SUPERIOR TO ACCEPT AND MEDITATE.
- **(BHARGAH)** HE BURNS ALL PAINS AND IS HOLY, SACRED AND PURE BY NATURE.
- **(TAT)** TO THAT ALMIGHTY GOD
- **(DHEMAHI)** WE SHOULD ACCEPT AND HOLD.
- **(YAH)** THAT ALMIGHTY GOD
- **(NAH)** OUR
- **(DHIYAH)** MIND IN BEST ATTRIBUTES, DEED AND NATURE (HABBIT & TEMPERAMENT).
- **(PRACHODAYAT)** INSPIRE US.

## Matrimonial Service

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

### **Changes we have made in April 2017:**

#### **Website:-**

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members would have received a letter in May with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

#### **Matrimonial Service:-**

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.

## News

### Get Well Soon:

- **This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telephone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.**
- **This is to inform our members and readers that Mr Vishwa Nath Bhandari, ex-Vice President of Arya Samaj West Midlands year 2001-2003 is recovering in Gracewell of Edgbaston Care Home, Speedwell Road, Edgbaston, Birmingham, B5 7PR and telephone number 0121 796 0796. We all wish him a speedy recovery.**
- **Mrs Deepika Datta is on waiting list for a kidney transplant. We wish her to get better soon.**

### Congratulations:

- **Dr. Vijay & Mrs. Babita Sawlani for the celebration of their 25th wedding anniversary with havan.**
- **Drs Gautam and Madhurima Rajkhoiya for Grih pravesh havan for their eldest son Siddharth new flat in London.**
- **Mr. Sandeep & Mrs. Prachi Warik for Namkaran Sanskar of their son who was named as Rishi.**
- **Ms Shine Duggal and family for 18th birthday celebration of dear daughter Shana in Arya Samaj being yajman.**
- **Mr. Navin & Mrs Jyoti Handa for Diwali & 18th birthday celebration of their son Jay/ Avanish.**

### Sponsors:

- **Dr. Vijay Bathla and family – Havan for eternal peace and prayer for their dear grandson Krishna.**

- Mrs. Nirmal Devi Prinja – Havan for eternal peace for her dear daughter Tripti on her 1st death anniversary.

**Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.**

**Donations to Arya Samaj West Midlands**

- |   |         |
|---|---------|
| • Mrs. Asha Verma                           | £10     |
| • Mrs. Nirmal Prinja                        | £10     |
| • Mrs. N Sethi                              | £31     |
| • Dr. Saroj Adlakha                         | £160.52 |
| • Mrs. Nirmal Devi Prinja with Rishi-Langar | £250    |
| • Mr. S.P. Datta                            | £11     |
| • Mrs. Sushma Grover                        | £75     |
| • Ms Shine Duggal with Rishi-Langar         | £201    |
| • Mrs. Rani Banga                           | £21     |

**Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.**

- |                                    |      |
|------------------------------------|------|
| • Mrs. Ved Datta                   | £51  |
| • Mr. Om Joshi                     | £21  |
| • Dr. ( Mrs. ) Thilgavathie Pillay | £250 |
| • Mrs. Anjali Middha               | £100 |
| • Dr. Vijay Sawlani                | £51  |
| • Dr. Gautam Rajkhoiya             | £51  |
| • Mr. Sandeep Warik                | £50  |
| • Mr. Navin Handa                  | £51  |

**Thank you for all your Donations!**

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on  
0121 359 7727  
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. 5th November & 3rd December 2017.**

**Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.**

*0121 359 7727*

E-mail- [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)  
Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

**Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**  
**NEW HOME**

**It gives me great pleasure to announce that on 23rd August 2017 we exchanged contract with Trinity Methodist Church, 321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.**

**Now Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is the owner of above free hold building.**

**HS2 bought our present headquarter at 188, Inkerman Street, Nechells and paid us the money in order to buy Church building same day.**

**Now the big refurbishment project for Rookery road building will start. We sincerely hope to complete refurbishment and move to the new Home last week of January 2018.**

**HS2 through Department for Transport has given us the present building at 188, Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA on lease, rent free, till 1st February 2018 to continue with our Sunday congregation, Day Centre and other activities.**

**Big congratulations to you all.**

**The new building is in middle of our own community area and is located on main bus route with bus stop just opposite to our building.**

**As written before we are getting about half of the funding required for total refurbishment. In very near future I will be sending out letters to you all to donate generously so that we can complete this noble work with your help. We will honour the donors in a very appropriate way.**

**This work has taken more than 5 years of time of members of The Board of Trustees present and past. I, as a Chairman, am grateful to all of you for all kinds of help given to me to achieve this gigantic task.**

**Kind regards.**

**Dr. Narendra Kumar - Chairman, the Board of Trustees**



**Ordinary Membership**  
**Of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands**

Dear Arya Samaj Members,

From January 2018 and onwards ORDINARY members of Arya Samaj West Midlands will have to pay £20 per annum to remain on the list of current members.

**Please note any amount of donation to Arya Samaj West Midlands will not count towards payment of membership fee.**

**Aryan Voice**

Those of you who are on our email database will receive your copy of monthly bulletin "Aryan Voice" on your emails from September 2017 and onwards and NOT by post unless you request our office for a hard copy.

Of course our members who do not use internet or email services and matrimonial members will keep receiving hard copy of Aryan Voice by post as it is at present time.

We must live within our means.

I am sure you will fully support our efforts regarding this matter.

Kind regards.

Yours sincerely  
Dr. Narendra Kumar  
Chairman  
The Board of Trustees